प्रातः क्लास ओमशान्ति 14-9-67

रिकार्डः- तू ही है प्यार..- ओमशान्ति। डबल भी कह सकते हैं। डबल ओमशान्ति।आत्मा अपना परिचय दे रही हैं। मैं आत्मा शान्ति स्वरूप हूँ।हमारा निवास स्थान शान्ति धाम है।और बाबा के हम सब सन्तान हैं। सभी आत्माएं ओम कहती हैं। और वहाँ हम सब भाई2 हैं।फिर यहाँ भाई-बहन बनते हैं।अब भाई-बहन से नाता शुरू होता है। बाप समझाते है हमारे सब बच्चे है।ब्रह्मा की भी सन्तान हो इसलिए तुम भाई-बहन ठहरे।तुम्हारा और कोई सम्बन्ध नही है।भाई-बहन।सब कहेंगे हम प्रजा पिता के सन्तान ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ हैं। बाप पुरानी दुनिया को चैंज करने इस समय ही आते हैं।बाप ब्रह्मा द्वारा ही नई सृष्टि रचते हैं। ब्रह्मा से भी तिलक है ना।युक्ति भी कितनी अच्छी है।सब ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ, अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है।और अपन को भाई बहन समझना है।क्रिमनल आइ न रहनी है।कुमार कुमारी जैसे बड़े होते जाते हैं तो आँखें क्रिमनल बनती जाती है।ताकि फिर क्रिमनल एक्ट कर लेते हैं।क्रिमनल एक्ट होती है रावण राज्य में।सतयुग में क्रिमनल एक्ट हो तो नहीं।क्रिमनल अक्षर हो नहीं होता।यहाँ तो क्रिमनल एक्ट बहुत हैं।उनके लिए फिर कौर्ट आद भी है।वहाँ कौर्ट आद होती नहीं।वन्डर है ना।न जज, न पुलिस, न जेल आद होती है।यह सब है दुख की बातें। जो यहाँ ही रही हैं।इसलिए बच्चों को समझाया गया है यह तो खेल है सुख और दुख का।हार और जीत का।इनको तुम ही समझते हो।गाया हुआ है माया ते हारे हार है...माया पर जीत बाप आये आधा कल्प लिए पहनाते हैं।फिर आधा कल्प हार खाते है।थोड़ा2 दुख उठाते हम बहुत दुखी हो जाते हैं।फिर बाप को बुलाते है।बाप कहते हैं हमको भी आना पड़ता है।यह कोई नई बात नहीं।यह तो साधारण पांच हजार वर्ष का खेल है।फिर तुम मुझे याद करते हो तो अपना राज्य भाग्य आधा कल्प लिए लेते हो।रावण राज्य में मुझे भूल जाते हो।रावण दुश्मन है। उनको हर वर्ष भारतवासी जलाते ही आते हैं।जहाँ बहुत भारत वासी होंगे वहाँ करते होंगे।कहेंगे यह भारत वासियों के धर्म का उत्सव आद है।अभी दशहरा आये रहा हैं।बच्चों को समझाना है।वह तो हद की बात है।रावण राज्य तो अभी सारी विश्व पर है।सिर्फ लंका पर नहीं है।विश्व तो बहुत बड़ी है ना।बाप ने समझाया है यह सृष्टि सारी सागर पर खड़ी है।मनुष्य कहते हैं नीचे एक बैल वा गऊ है जिनके सींग पर सृष्टि खड़ी है। फिर थक जाती है तो बदलती है।अब यह बातें तो हैं नहीं।पृथ्वी तो तो पानी पर खड़ी है।चारों तरफ पानी ही पानी है।अब तो सारी दुनिया में रावण राज्य है।फिर राम अथवा ईश्वरी राज्य स्थापन करने बाप को आना पड़ता है।सिर्फ ईश्वर अक्षर कहने से भी कह देते है ईश्वर तो सर्वशक्तिवान है।सब कुछ कर सकते हैं।फलटू महिमा हो जाती है।इतना लव नहीं रहता।यहाँ ईश्वर को बाप कहा जाता हैं।बाप कहने से मिलने की बात हो जाती है।शिव बाबा कहते हैं हमेशः बाबा2 कहना चाहिए। ईश्वर या प्रभु अक्षर भूल जानी चाहिए।बाबा ने कहा है मामेकं याद करो। प्रदर्शनी आद में भी जब समझाओ तो घड़ी2 शिव बाबा का परिचय दो।शिव बाबा एक ही ऊँच ते ऊँच है।जिसको गाड फादर कहा जाता हैं।मुसलमान अल्लाह कहते हैं।सुबह को भी 10 मिन्ट कुरान का बैठ अर्थ करते है।कि अल्लाह मियाँ ने क्या कहा है।किसको दुख न देना चाहिए।यह न करना चाहिए।ऐसे नहीं समझते है कि बाबाने कहा है।बाबा अक्षर सभी से मीठा है।शिव बाबा, शिव बाबा मुख से निकलता है।मुख तो मनुष्य का ही होगा।गऊ का मुख थोड़े ही हो सकता।बाबा कहते है मनुष्य कितने पत्थर बुधि है। उस में यह भी पत्थर बुधि था।मनुष्य पत्थर बुधि यह नहीं समझते गऊ मुख से ज्ञान कैसे मिल सकता है।ज्ञान तो जब मनुष्य ही देंगे।तुम हो शिव शक्तियाँ।तुम्हारे मुख कमल से ज्ञानामृत निकलता है।तुम्हारा नाम बाला करने गऊ मुख कह दिया है।गंगा के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि मुख कमल से अमृत निकलता है।तुम हरेक के मुख कमल से ज्ञानामृत निकलता है।ज्ञानामृत पिया तो फिर विष पी नहीं सकते।अमृत पीने से तुम देवता बनते हो।विष से असुर।अब मैं आया हूँ असुरों को देवता बनाने।तुम अब दैवी सम्प्रदाय बन रहे

हो। संगम युग कब ,कैसे होता है यह भी किसको पता नहीं।तुम जानते हो हम ब्रहमण ब्रहमाकुमार-कुमारियां पुरुषोतम संगम युगी हैं।बाकि जो भी है सब कलयुगी।तुम कितने थोड़े हो।झाड़ की भी तुमको नालेज है।झाड़ पहले छोटा होता है।फिर वृधी को पाता है।कितनी इनवेन्शन निकलते है।कि पैदाईश कम कैसे हो।परन्तु नर चाहते कुछ और है और की औरी भई। चितवत... सब का मृत्यु तो होना ही है। चितवत क्या करते रहते है सब ठग लोग है।अनेक प्रकार के पलैनस आद बनाते रहते है।तुम्हारा ईश्वरीय पलैन देखो कैसा है।वह अनेक आसुरी पलैन चल रही है।बाबा का है गुप्त पलैन।वह कितने पलैन बनाते है।और अन्न मंगाते रहते है।समझते है अब फसल बहुत अच्छा होगा।आई बरसात कितना नुकसान कर देती।नेचरल कलैमिटीज को कोई समझ न सके।कोई भी बात पर ठिकाना नहीं है।कहां फसल हो और बर्फ का ओले पड़ जाये तो कितना नुकसान हो जाता।न पड़े तो भी नुकसान।पड़े तो भी नुकसान।इनको कुदरती आपदा कहा जाता है।यह तो ढेर होनी है।इनसे बचने लिए बहुत बहादुर होना चाहिए।कोई का आपरेशन होता है वह देख नहीं सकते।तो अनकान्सेस हो जाते है।अब इस सारी सृष्टि का आपरेशन होना है। बाप कहते है मैं आये सब का आपरेशन करता हूं।सारी सृष्टि रोगी है।अविनाशी सर्जन भी बाप का नाम है।यह सारी विश्व का आपरेशन कर देंगे।जो फिर विश्व में रहने वाले को कब दुख नहीं होगा।कितना बड़ा सर्जन है।आत्माओं का भी आपरेशन ,बेहद की सृष्टि का भी आपरेशन करने वाला सर्जन है।वहां मनुष्य तो क्या जानवर भी रोगी नहीं रहते।बाप बैठ समझाते है मेरा और बच्चों का क्या पार्ट है।इसको कहते है रचता और रचना की आद,मध्य अंत का ज्ञान।जो तुम ही ले रहे हो।बच्चों को पहले2 तो यह खुशी होनी चाहिए ।आजसतगुरुवार है भी हम्हाः सत बोलना चाहिए।व्यापार में कहते है ना सत्य बोलो।ठगी की बात न करो।फिर भी लोभ में आये कर कुछ कम कर सौदा कर देंगे।सच्च कब कोई बोलते नहीं।झूठ ही झूठ बोलते है।इस लिए सत्य को याद करते है।कहते है ना सत नाम संग है वह झूठ बोलते है।अभी तुम जानते हो बाबा जो सत्य है वह ही संग चलेंगे हम आत्माओं के साथ। अभी सत्य के साथ तुम आत्माओं का संग हुआ है।तो तुम ही साथ जावेंगे।तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा आया हुआ है।जिसको ट्रुथ कहा जाता है।वह हम आत्माओं को प्युर बनाये साथ ले जावेंगे।एक ही बार।सतयुग में ऐसे नहीं कहते है।राम2 संग है या सत्य नाम संग है नहीं।बाप कहते है अभी मैं तुम बच्चों के पास आया हूं।नयनों पर बिठाये ले जाता हूं।यह नयन नहीं।तीसरा नेत्र।तुम बारात बनते हो।तुम जानते हो इस समय बाप आये है।करोड़ों को साथ लेजावेंगे।शंकर की बारात नहीं।शिव की बच्चों की बारात है।वह पतियों का पति भी है।कहते है तुम सब ब्राइडस हो:,मैं हूं ब्राइडग्रुम।तुम सब आशुक हो ,मुझ एक माशुक के। माशुक एक ही होता है।तुम आधा कल्प से मुझ माशुक के तुम आशुक हो।अभी मैं आया हुआ हूं।सभी भक्त है।भक्तों की रक्षा करने वाला है भगवान।आत्मा भक्ति करती है शरीर के साथ।सतयुग त्रेता में भक्ति होती नहीं।भक्ति का फल सतयुग में भोगते है।जो अब बच्चों को दे रहे है।वह तुम्हारा माशुक है।जो तुमको बिलकुल साथ ले जावेंगे।फिर तुम अपने पुरुषार्थ अनुसार जाये राजभाग लेंगे।यह कहां भी लिखा हुआ नहीं है।कहते है शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई।तुम सब हो पार्वतियां।मैं हूं कथा सुनाने वाला अमरनाथ। अमरनाथ एक को ही कहा जाता है।ऊंच ते ऊंच बाप।उनको अपनी देह नहीं है।कहते है अमरनाथ तुम बच्चों को अमर कथा सुनाता हूं।शंकर पार्वती यहां कहां से आये सकते।वह तो सूक्ष्म वतन में जहां सूर्य चान्द की भी गम नहीं रहती। बाकि सब भक्ति मार्ग की दन्त कथाएं है। गीता कैसे बैठ बनाई है हे अर्जुन पिंडी खाने से यह होता है...ऐसे 2 कथाएं बैठ बनाई है झूठ मिलेई झूठ ,सच्च की रती नहीं।साधु सन्त आद जो सुनाते है सब झूठ।गीता में है भगवानुवाच। श्रीमदभगवदगीता।भगवान तो भगवान ही होना चाहिए ना।कहते है कृष्ण ने कहा।सर्वव्यापी हूं।अब

कृष्ण थोड़े ही कहेंगे कि मैं सर्वव्यापी हूँ। कृष्ण के भक्त होंगे तो कहेंगे जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। बहुत खुश होते रहते हैं। भक्ति मार्ग में तुम क्या2 सुनते आये हो। अब बाप क्या समझाते हैं। वन्डर है व्यास ने क्या बैठ बनाया। वेद व्यास कहते हैं। तो क्या व्यास ने बैठ वेद बनाई। भगवान कौन है यह भी नहीं जानते। अगर भगवान सर्वव्यापी है तो वेद कैसे बैठ लिखेगा। अब तुम समझते हो झूठ ही झूठ है। सत्य है ही एक बाप। तुमको सत्य कथा सुनाते हैं। बाप बिगर सच्चा कथा कोई सुनाये न सके। यह भी समझते हो विनाश होने में टाईम लगता है। कितनी बड़ी दुनिया है। कितने ढेर मकान आद गिर कर खतम होंगे। अर्थक्वेक में कितना नुकसान होता है। कितने मरते हैं। कहाँ अर्थक्वेक होती है फिर झट मकान आद बनाये लेते हैं। अभी तो सारी विश्व को अर्थक्वेक होनी है। फिर बाकि तुम्हारा छोटा झाड़ होगा। देहली परिस्तान थी। एक ही परिस्तान में लक्ष्मी नारायण का राज्य चलता है। कितनी बड़ी। महल बड़ी बगीचे होंगे। बेहद की जागीर मिलती है ना। तुमको कुछ भी खर्चा नहीं करना पड़ता है। बाप कहते हैं इनके लाइफ में ही कितना सस्ता अनाज था। तो सतयुग में कितना सस्ता होगा। देहली जितनी तो एक घर और जमीन आद होगी। मीठी नदियों पर तुम्हारा राज्य होगा। एक एक कोना क्या न होगा। सदैव अन्न मिलता रहेगा। वहाँ के फल फूल भी देखो हैं कितने बड़े2 होते हैं। तुम सोमी रस पीकर आते थे। कहते थे वहाँ माली है, अब माली तो जरूर बैकुण्ठ में अथवा नर्दा किनारे ही होगा। सूक्ष्म वतन में थोड़े ही माली होगा। वहाँ कितने थोड़े होंगे। कहाँ अभी 5 करोड़, कहाँ 9 लाख होंगे। और सब कुछ तुम्हारा होगा। बाप ऐसी राजाई देते हैं जो हम से कोई छीन न सके। आसमान धरती आदि सब के मालिक तुम रहते हो। गीत भी बच्चों ने सुना। यह गीत तो सबको घर में रखना चाहिए। जाग सजनियाँ जाग.. इस पाप की दुनिया से.. ऐसे2 गीत 6-8 हैं जो घर में जरूर रखना चाहिए। अपन को रिफ्रेश करने लिए। ऐसे2 गीत सुनने से ही खुशी का पारा चढ़ जाता है। देखो अवस्था में कुछ गरबड़ है गीत बजा लो। यह है खुशी की। तुम तो अर्थ भी जानते हो। बाबा बहुत युक्तियाँ बतलाते हैं। अपन को हर्षितमुख बनाने की। बाबा को लिखते हैं बाबा इतनी खुशी नहीं होती। माया का तूफान आती है। और माया की तूफान आये तुम बाजा बजाये तो खुशी केलिए। बड़े2 मंदिरों में भी फाटक पर बाजा बजाते हैं। बाम्बे में माधोबाग में लक्ष्मी नारायण के मंदिर के फाटक पर बाजा बजता रहता है। तुमको कहते हैं यह फिल्मी रिकार्ड क्यों बजाते हो। उनको क्या पता। यह भी ड्रामा अनुसार काम में आने की चीज है। इनका अर्थ तो तुम बच्चे ही समझते हो। यह सुनने से भी बोध में आ जावेंगे। परन्तु बच्चे भूल जाते हैं। घर में किसको कोई गमी हो तो यह गीत ले जाना चाहिए। सुन कर बड़ी खुश होंगे। यह बहुत वैल्युएबल चीज है। कोई के घर आद में झगड़ा हो तो रिकार्ड बैठ सुनो तो गम अथवा दुख उड़ जावेगा। स्त्री का पति साथ झगड़ा हो जाये तो बैठ कर रिकार्ड बजावे। अर्थ बैठ सुनावे। अवस्था बड़ी हर्षितमुख चाहिए। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। बाबा युक्तियाँ भी बताते रहते हैं। विश्व पर भी बहुत झगड़ा बहुत चलता है। बोलो भगवानुवाच है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से हम विश्व के मालिक बनेंगे। फिर फूलों की वर्षा होगी। जयजयकार हो जावेगी। सोने के फूल बरसेंगी। तुम अभी काँटे से सोने के फूल बन रहे हो। फिर तुम्हारा अवतरण होगा। फूल नहीं बरसते परन्तु तुम फूल बन कर आते हो। मनुष्य समझते हैं सोने के फूल बरसते हैं। एक राजकुमार विलायत में गया वहाँ पार्टी दी थी। उनके लिए सोने के फूल बनवाये। सब के उपर वर्षा की। खुशी के मारे इतनी मीतबा की। एक पार्टी में 40 हजार रुपये की फूल बनाई। सच्चे2 सोने की बनाई। बाबा उनके स्टेट आद को अच्छी रीत जानते हैं। वास्तव में तुम फूल बन कर आते हो। सोने के फूल तुम उपर से आते हो। तुम बच्चों को कितनी लाटरी मिल रही है। विश्व की बादशाही की। जैसे लौकिक बाप बच्चों केलिए सौगात लाते हैं तो बच्चे कितने खुश होते हैं। बाबा भी कहते हैं तुम्हारे लिए फल ले आया हूँ। कोई छोटी सौगात थोड़ी कहते हैं बाबा आप तो विश्व की बादशाही देते हो। बच्चे यह यादगार है